MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 15 मत्स्यत्रयकथा

मत्स्यत्रयकथा हिन्दी अनुवाद

वेलाग्रामस्य कस्मिञ्चित् जलाशये अनागतविधाता
प्रत्युत्पन्नमतिः यद्यविष्यश्चेति नामकाः त्रयः मत्स्याः अवसन्।
कदाचित् तं जलाशयम् अवलोक्य धीवराः परस्परमवदन्,
"अस्मिन् जलाशये बहवः मत्स्याः सन्ति, प्रभाते अस्माभिः
अत्र अवश्यमेव आगन्तव्यम् इति।" एतादृशं निश्चयं कृत्वा
ते अगच्छन्। एतत् श्रुत्वा तेषु मत्स्येषु अनागतविधाता नाम
मत्स्यः अकथयत्, "श्वः प्रभाते ते धीवरा: नूनमेव अत्र आगमिष्यन्ति, सर्वान् च मत्स्यान् जाले बध्दता नेष्यन्ति।"
एतच्चिन्तयित्वा अनागतविधाता अन्यज्जलाशयं अगच्छत्। एतज्ज्ञात्वा प्रत्युत्पन्नमतिः नाम मत्स्यः "समयानुगणं कार्य करोमि" इति उक्त्वा निश्चिन्तः अभवत्। तृतीयः मत्स्यः यद्मविष्यः अवदत्, "भगवच्छक्त्या अहं जीवामि। यदि मरणमेव निश्चितं तर्हि जलाशयान्तरेण किं प्रयोजनम्? भाग्यानुसारं यद् भविष्यति तद् भवतु" इति।

अनुवाद :
'वेला' ग्राम के किसी जलाशय में अनागतविधाता,
प्रत्युत्पन्नमति और यद्भविष्यत् नामक तीन मछलियाँ रहती
थीं। किसी समय उस तालाब को देखकर धीवर' आपस में बोले-'इस जलाशय में बहुत सी मछलियाँ हैं, प्रात:काल हमें यहाँ अवश्य ही आना चाहिए।' इस तरह का निश्चय करके वे चले गये। इसे सुनकर, उन मछलियों में से 'अनागतविधाता' नाम की मछली ने कहा, "कल प्रात:काल ही वे धीवर (मछुआरे) अवश्य ही यहाँ आयेंगे और सभी मछलियों को जाल में बाँधकर ले जायेंगे।" ऐसा सोचकर 'अनागतविधाता' तो दूसरे तालाब को चली गई। इसे जानकर 'प्रत्युत्पन्नमति' नामक मछली "समय के अनुसार कार्य करती हूँ" ऐसा कहकर चिन्तामुक्त हो गई। तीसरी मछली 'यद्भविष्यत' बोली-"भगवान की शक्ति से मैं जीवित हूँ।" यदि मरना ही निश्चय है तो दूसरे जलाशय से क्या लाभ ? भाग्य के अनुसार जो हो, वह हो जाए।"

प्रभाते धीवराः जलाशयं गत्वा जालं प्रसार्य मत्स्यान् अगृणन्। प्रत्युत्पन्नमतिः मृतः इव अतिष्ठत्। मृतमिव प्रत्युत्पन्नमतिं दृष्ट्वा धीवरः तं जालात् बहिः अकरोत्। प्रत्युत्पन्नमतिः स्वानामानुगुणं मतिप्रयोगेण ततः जले अकूर्दत् जलाशयान्तरे प्राविशच्च। तृतीयः मत्स्यः जाले पतितः धीवरैः कर्तितः मृतश्च अभवत्। तच्चोक्तम्-

"अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा।
द्वावेतौ सुखमेधेते यद्भविष्यो विनश्यति॥"

अनुवाद :
प्रात:काल धीवरों (मछुआरों) ने तालाब पर जाकर जाल फैलाकर मछलियों को पकड़ा। 'प्रत्युत्पन्नमति' मरे हुए जैसी हो गई। मरी हुई सी प्रत्युत्पन्न मति को देखकर धीवर (मछुआरे) ने उसे जाल से बाहर कर दिया। 'प्रत्युत्पन्नमति' अपने नाम के अनुसार मति (बुद्धि) का प्रयोग करके इसके बाद जल में कूद गयी और दूसरे जलाशय में प्रवेश कर गयी। तीसरी मछली जाल में गिर जाने से (फंस जाने से) धीवरों के द्वारा काट डाली गई और मर गई। उसने कहा-

“अनागतविधाता और प्रत्युत्पन्नमति ये दोनों सुख से वृद्धि। को प्राप्त हुईं परन्तु ‘यद्भविष्यत्’ नष्ट हो गई है।”

मत्स्यत्रयकथा शब्दार्थाः

मत्स्याः = मछलियाँ। जलाशयः = तालाब। धीवरः = मछुआरा। अवलोक्य = देखकर। नूनम् = अवश्य। बध्वा = बाँधकर। जलाशयान्तरम् = दूसरे जलाशय में। अगृहणन् = पकड़ लिए। सुखमेधेते = (दोनों) सुख से बढ़ रहे हैं। विनश्यति = नष्ट होता है।

---

https://www.evidyarthi.in/